ShaneNabi.In

Best Sunni Islamic Website

(बेस्ट सुन्नी इस्लामिक वेबसाईट)

छूटे न कभी तेरा दामन,
या ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन

(हिन्दी नात लीरिक्स)

लिखा हैं (लेखक): सय्यद नूरानी मियां अशरफ़ अशरफ़ी

सोशल नेटवरकस पर हमें फ़ॉलो करें:

https://youtube.com/@shanenabi

https://www.facebook.com/shanenabi.in

https://www.instagram.com/shanenabi.in

https://twitter.com/ShaneNabi_In

अधिक लीरिक्स और इस्लामी सामग्री के लिए कृपया हमारी वेबसाईट https://shanenabi.in पर जाये

यह लीरिक्स https://shanenabi.in से डाउनलोड/प्रिंट किया गया है

सहायता/अनुरोध के लिए support@shanenabi.in पर हमसे संपर्क करें

छूटे न कभी तेरा दामन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !
है तुम पे फ़िदा सब तन-मन-धन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

छूटे न कभी तेरा दामन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !
करते हैं फ़िदा सब तन-मन-धन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

अजमेर मुझे पहुँचा दे ख़ुदा, चादर मैं चढ़ाऊँ फूलों की
फिर सदक़ा करूँ अपना तन-मन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

आक़ा की 'अता, हो नूर-ए-'अली, ज़हरा की कली, वलियों के वली
हसनैन के दिल, 'उस्मॉं के नयन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

का'बा हो, मदीना हो या नजफ़, हर जा पे नज़र तुम आते हो
कुछ ऐसी लगी है दिल की लगन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

मय-ख़ाने में मेरी मस्ती कुछ इस तरह नज़र आए, साक़ी !
मैं रक़्स करूँ और हो छन-छन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

दरबार में मैं ऐसे आऊँ, सब हाल मेरे मस्तूर रहें
और बात करूँ मैं मन ही मन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

थक हार के मैं पहुँचा दर पे, आराम मिला जब आप मिले
और लगने लगा फिर अपनापन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

ऐ पैकर-ए-जूद-ओ-सख़ा ख़्वाजा ! अग़्यार न क्यूँ हैरान रहें
जब रहमत-ए-'आलम साया-फ़िगन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

ये मस्त-निगाही है, ख़्वाजा ! जो मस्त-ओ-मलंग बनाती है
दरबार में हो आज़ाद चलन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

© ShaneNabi.In
© ShaneNabi.In
© ShaneNabi.In

अजमेर की धरती पे चलना आसान नहीं यूँ बोल उठी
ऐ नूर ! तेरे दिल की धड़कन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

अब नूर तेरे दर पे आ के इज़हार-ए-'अक़ीदत कैसे करे
खाए है उसे बस ये उलझन, या ख़्वाजा मु'ईनुद्दीन हसन !

© ShaneNabi.In
© ShaneNabi.In
© ShaneNabi.In